International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 18-01-2019; Accepted: 23-02-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 61-63

मर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 जय सिंह[1], अजय कुमार सिंह[2]
[1] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा मिर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.70 है तथा मानक विचलन 11.69 है और छात्राओं का औसत उपलब्धि 58.88 है तथा मानक विचलन 10.69 है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है। ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.65 है तथा मानक विचलन 11.10 है और शहरी छात्र–छात्राओं का औसत उपलब्धि 58.04 है तथा मानक विचलन 11.00 है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : मिर्जापुर जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षक, शिक्षण कौशल, विद्यार्थी, शिक्षण अधिगम।

1. प्रस्तावना
शिक्षा सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य ने आदिकाल से ही शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया तथा उसने यह भी माना कि शिक्षा ही उसके जीवन को सुखमय बनाने हेतु केवल एकमात्र साधन है। यही कारण है कि मानव सभ्यता के प्रथम चरण से ही उसके द्वारा शिक्षा के अनुप्रयोग के संकेत प्राप्त होने लगते हैं। आज विश्व में ईसा के जन्म के 1200 वर्ष पूर्व तक के शैक्षिक इतिहास में साक्ष्य उपलब्ध हैं जो शिक्षा की उपयोगिता के स्तर को आज से लगभग 3000 वर्ष से स्वीकार करने के तथ्य को सत्यापित करते हैं। यह बात अवश्य है कि समय परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षा के स्वरूप तथा उद्देश्यों में भी परिवर्तन होते रहते हैं किन्तु इसका महत्व तो सदैव सर्वोपरि ही रहता है।
शिक्षा विधि जानकारियों का ढेर नही है जो तुम्हारे मस्तिष्क में भर दिया गया है और जो आत्मसात् हुए बिना वहॉ आजन्म पड़ा रहकर गडबड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है जो जीवन निर्माण, मनुष्य निर्माण, तथा चरित्र निर्माण में सहायक हो। उन्होने एक स्थान पर कहा है कि हमें तो ऐसी शिक्षा चाहिए जिससे चरित्र बने, मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।
निश्चित तौर पर शिक्षकों को उस साम्रगी को समझना चाहिए जो वे सिखाना चाहते हैं। स्वाभाविक रूप से, विभिन्न पदों के लिए विभिन्न प्रकार और कौशल के स्तर की आवश्यकता होती है, लेकिन बहुत छोटे बच्चों के शिक्षकों को भी महत्वपूर्ण विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।
यहाँ पर माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप पड़ने वाले प्रभाव की सफलता के लिए किये जा रहे सभी प्रयासो तथा उक्त सम्बर्ग के शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया के क्रियान्वयन के लिए वास्तविक स्थिति का अध्ययन तथा उसमें वांछित सुधार हेतु सुझाव देने के लिए शैक्षिक शोध करने की आवश्यकता है। उसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोध समस्या का चयन किया है। शोधार्थी को आशा है कि उसका शोध कार्य न केवल मिर्जापुर जिले की माध्यमिक शिक्षा स्तर को सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने में सार्थक होगा वरन् प्रदेश तथा देश के अन्य क्षेत्रों में भी किया जा सकेगा।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल मिर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का विद्यार्थियों के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

3. शोध की परिकल्पनायें
1. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य
- शिक्षकों के प्रशिक्षण के परिणामस्वरूप छात्रों के अधिगम स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों हेतु आयोजित प्रशिक्षण में आने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन
5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र मिर्जापुर जिला है। इसके अन्तर्गत 4 तहसीले – चुनार, लालगंज, मारिहान एवं मिर्जापुर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक

शिक्षा स्तर द्वारा किये जाने वाले कार्य इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षणों के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्श के रूप में चयनित माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधि – शोध क्षेत्र मिर्जापुर जिले में शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। चूंकि मिर्जापुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नही है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 10–10 माध्यमिक विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया के क्रियान्व्यन के परिणामस्वरूप पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार किया गया।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – यादव, विजय शंकर एवं बघेल, डॉ. डी. एस. सिंह (2018)[1], गुप्ता, एस.पी. (1997)[2], सिद्धू के.एस. (1984)[3], अग्रवाल, अनिल (2005)[4] और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (1998)[5]

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मिर्जापुर भारतीय राज्य उत्तरप्रदेश का एक जिला है। दिल्ली और कोलकता दोनों से लगभग 650 कि.मी., इलाहाबाद से 87 कि.मी. और वाराणसी से 67 कि.मी. दूर है। इसकी आबादी 2496970 है। यहाँ चार तहसीले – सदर, चुनार, लालगंज व मरिहान है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक –01: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 1: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

समूह		छात्र	छात्राओं
समूह की संख्या (N)		800	800
मध्यमान (M)		58.70	58.88
मानक विचलन (SD)		11.69	10.69
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–0.31	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (800-1) + (800-1) = 799+799 = 1598

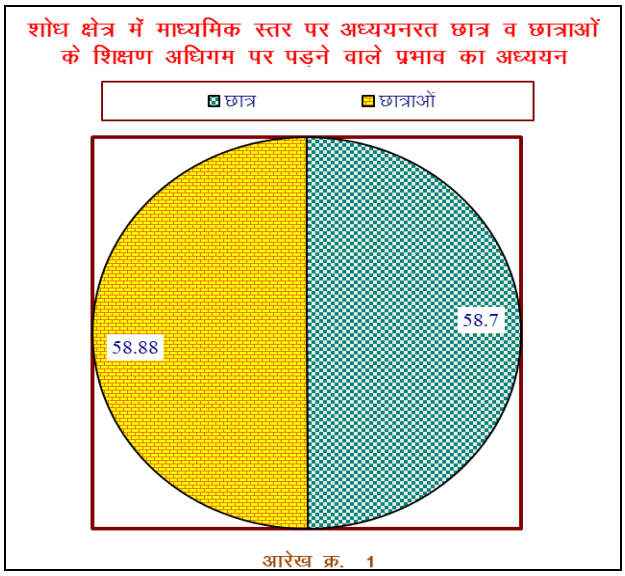

आरेख क्र. 1

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित

प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.70 है तथा मानक विचलन 11.69 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.28 में न्यादर्श में चयनित शोध शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.88 है तथा मानक विचलन 10.69 है।

1598 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.31 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02 "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		800	800
मध्यमान (M)		57.65	58.04
मानक विचलन (SD)		11.10	11.00
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–0.70	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (800-1) + (800-1) = 799+799 = 1598

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.65 है तथा मानक विचलन 11.10 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में न्यादर्श में चयनित शोध शोध क्षेत्र के शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.04 है तथा मानक विचलन 11.00 है।

1598 कि पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.70 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.70 है तथा मानक विचलन 11.69 है। छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.88 है तथा मानक विचलन 10.69 है। 1598 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.31 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 57.65 है तथा मानक विचलन 11.10 है। शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थकता का औसत उपलब्धि 58.04 है तथा मानक विचलन 11.00 है। 1598 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –0.70 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं के शिक्षण अधिगम पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. संदर्भ

1. यादव, विजय शंकर, बघेल, डॉ. डी. एस. सिंह (2018) : इलाहाबाद जिले में माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की तार्किक योग्यता का अध्ययन, International Journal of Advanced Education and Research. 2018; 3(4):46-49.
2. गुप्ता, एस0पी0, सांख्यिकीय विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, 11 युनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, 1997.
3. सिद्धू, के0एस0 (1984) : ''मेथेडोलॉजी ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
4. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
5. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (1998): शैक्षिक प्रेक्षक (समाचार), उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना, निशातगंज, लखनऊ।